ASVP ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA

An International peer reviewed, open approach referred multi-disciplinary research journal

Indexing By:
Indexing No.: 5900
International Institute of Organized Research (I2OR)
(An Organized Research Platform)
Melbourne, Australia

DR. RAJEEV KUMAR SRIVASTAVA
Managing Director/Chief Editor/Publisher

Vol.-11, No.-II, Issues-XIV YEAR- Dec-2019
www.aryavartsvs.org.in

I2OR Publication Excellence Award 2018
I2OR Excellence International Journal Award 2019

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

54. जातियों का राजनीतिकरण
—तनुजा, बोधगया (बिहार) 171–173

55. रामायणकार ऋषि वाल्मीकि
—प्रो. एस. ए. सूर्यनारायण वर्मा, विशाखपट्टणम (आंध्र प्रदेश) 174–175

56. स्त्री अस्मिता की नई तलाशः नव–वामपंथी कवियों के झरोखे से
—शैजू के, कोच्चि (केरल) 176–177

57. पंचायती राज, राजनीतिक समाजीकरण तथा महिलाएं
—गीता कुमारी, बोधगया (बिहार) 178–179

58. बालक का सामाजिक विकास एवं बाल अपराध
—शिखा श्रीवास्तव, बलिया (उ0प्र0) 180–181

59. विशिष्ट एवं अपवंचित बालक
—शिखा श्रीवास्तव, बलिया (उ0प्र0) 182–182

60. गाँधीजी की बेसिक शिक्षा–एक अध्ययन
—दिग्विजय यादव, बलिया (उ0प्र0) 183–185

61. प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान समय में प्रासंगिकता
—समित कुमार सिन्हा, बलिया (उ0प्र0) 186–188

62. भूमण्डलीकरण युग में गांधी दर्शन की उपादेयता
—अजय रावत, गोरखपुर (उ0प्र0) 189–191

63. बुद्ध का आर्थिक और व्यवहारिक चिन्तन
—सुनील कुमार चतुर्वेदी, मिर्जापुर (उ0प्र0) 192–196

64. साहित्य और समाज
—जानकी प्रसाद, समरहिल (शिमला) 197–199

65. वैदिक एवं बौद्ध शिक्षा में तुलना
—विनोद कुमार दूबे, मिर्जापुर (उ0प्र0) 200–202

66. पूर्वी सिंहभूम जिले में मानव क्रिया कलाप एवं पर्यावरण प्रदूषणः एक भौगोलिक अध्ययन 203–205
—शारदा शरण पाण्डेय, चाईबासा (झारखण्ड)

67. रामदरश मिश्र के 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में ग्राम्य–जीवन का यथार्थ 206–209
—मुकेश चन्द, भरतपुर (राजस्थान)

68. उच्च शिक्षा में इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी की भूमिका 210–213
– 1. आनन्द प्रकाश सिंह, हल्द्वानी (नैनीताल) 2. ज्योति जोशी, रानीखेत (अल्मोड़ा)

69. बदलते परिदृश्य में मानव विकास की ओर अग्रसर भारत 214–217
—शशिबाला, वाराणसी (उ0प्र0)

70. उच्च शिक्षा : क्षमता व गुणवत्ता के नये प्रयास एवं सम्भावनाऐं (उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में) 218–222
—1. आनन्द प्रकाश सिंह, हल्द्वानी (नैनीताल) 2. ज्योति जोशी, रानीखेत (अल्मोड़ा)

71. उषा प्रियम्वदा और उनकी कहानी वापसी 223–224
—उषा रानी सी., चेन्नई (तमिलनाडु)

72. अहिंदी भाषियों का हिंदी में योगदान 225–227
—एस.राजलक्ष्मी, चेन्नई (तमिलनाडु)

73. मूल्यों पर सामाजिक मीडिया का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 228–230
—सरिता सिंह, जौनपुर (उ0प्र0)

Scanned by CamScanner

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 225-227
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-II, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

अहिंदी भाषियों का हिंदी में योगदान

एस. राजलक्ष्मी
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, लोयोला महाविद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 30.11. 2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: rksharpur2@gmail.com

सारांश : **व्यक्ति समाज में अपने अस्तित्व बनाने के लिए अपने भाव– विचार एवं संवेदना को संप्रेषित करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वदा अपूर्ण है और अपनी इतिहास तथा परंपरा से अलग नहीं है। भाषा एक पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परस्पर विचारों का आदान– प्रदान करता है। जी.एल ट्रेगर के शब्दों में 'Alanguage is a system at orbitrary vocal symbols by means of which a social group co & operates'.**

भारत में विभिन्न बोलियों के रूप में लगभग 780 भाषाएं प्रचलित है।इनको 66 लिपियों के द्वारा लिखा जाता है भारत के संविधान के द्वारा 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। इनमें जनसंख्या ,क्षेत्रीय विस्तार और बोलियों की संख्या की दृष्टि से हिंदी सबसे उन्नत भाषा है।

कुंजी शब्द– समाज, अस्तित्व, भाव–विचार, संवेदना, संप्रेषित, सर्वदा, बोलिया, क्षेत्रीय विस्तार, मान्यता, उन्नत।

करो अपनी भाषा पर प्यार ।
जिसके बिना मुख रहे थे तुम रुकते सब व्यवहार।।
जिसमें पुत्र पिता कहता है पत्नी प्राणाधार ,
और प्रकट करते हो जिसमें तुमने से निकल विचार ।
बढ़ायो बस उसका विस्तार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।
भाषा बिना व्यक्ति जाता है ईश्वरीय ज्ञान,
स्थानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्यक है इसके उपकार ।
करो अपनी भाषा पर प्यार।।
यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान प्रसाद,
और तुम्हारा भी भविष्य को देखें शुभ संवाद।
बनाओ इसे गले का हार।
करो अपनी भाषा पर प्यार।। – मैथिलीशरण गुप्त

डॉ राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में सन 1946 में ही यह निर्णय लिया गया है कि सभा की कामकाज की भाषा हिंदुस्तानी अर्थ अंग्रेजी होगी। 14 जुलाई 1947 को संविधान सभा के चौथे सत्र में संशोधन प्रस्तुत किया गया, तब हिंदुस्तानी के स्थान पर हिंदी शब्द रखा गया।14 सितंबर 1949 राजभाषा संबंधी सभी अनुच्छेद ३४३(१) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी हो गई।

हिंदी दीर्घकाल से पूरे देश में जन जन के पारस्परिक संपर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तरी भारत की नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के आचार्य वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था । हिंदी भाषी राज्यों के भक्त संत कवियों जैसे असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चौतन्य महाप्रभु आदि इसी भाषा को अपने धर्म और साहित्य का माध्यम बनाया था। इसी कारण से जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापना के क्रम में फारसी या अंग्रेजी के माध्यम से दिक्कतें आई तो कंपनी सरकार ने फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदुस्तानी विभाग खोल कर अधिकारियों को हिंदी सिखाने की व्यवस्था कि यहां से हिंदी पढ़े हुए अधिकारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देकर मुक्त कंठ से हिंदी को सराहा। सी.टी.मेटकाफ ने 1806 ई. में अपने शिक्षा गुरु जान गिलक्राइस्ट को लिखा– "भारत के जिस भाग में भी मुझे काम करना पड़ा है। कोलकाता से लेकर लाहौर तक, कुमाऊं के पहाड़ से लेकर नर्मदा नदी तक मैंने उस भाषा का आम व्यवहार देखा है, जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी है । मैं कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक या जावा से सिंधु तकइस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूं कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाए जो हिंदुस्तानी बोल लेते होंगे"। टाम रोबक ने 1807ई. में लिखा," जैसे इंग्लैंड जाने वाले को लैटिन सेक्सन या फ्रेंच के बदले अंग्रेजी सीखनी चाहिए वैसे भारत आने वाले को अरबी फारसी या संस्त के बदले हिंदुस्तानी सीखनी चाहिए। "विलियम केरी ने 1816 ई. में लिखा," हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।" जॉर्ज ग्रियर्सन ने हिंदी को 'आम बोलचाल की महाभाषा' कहा है।इस प्रकार स्वतंत्रता के पूर्व भी हिंदी की महानता को देखकर अहिंदी भाषी संत हो या अंग्रेजी शासन के दौर के विदेशी लोग हिंदी की मुख्यता को पहचान कर उसके विकास के लिए योगदान दिए।

भारत में अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी बोलने वाले की संख्या बढ़ती रही। इन राज्यों में यह संपर्क भाषा के रूप में बोली, लिखी और पढ़ी जाती है। इसके अलावा

अनुरूपी लेखक

Scanned with CamScanner
Scanned by CamScanner